सिकलसेल एनिमिया के बारे में सही जानकारी

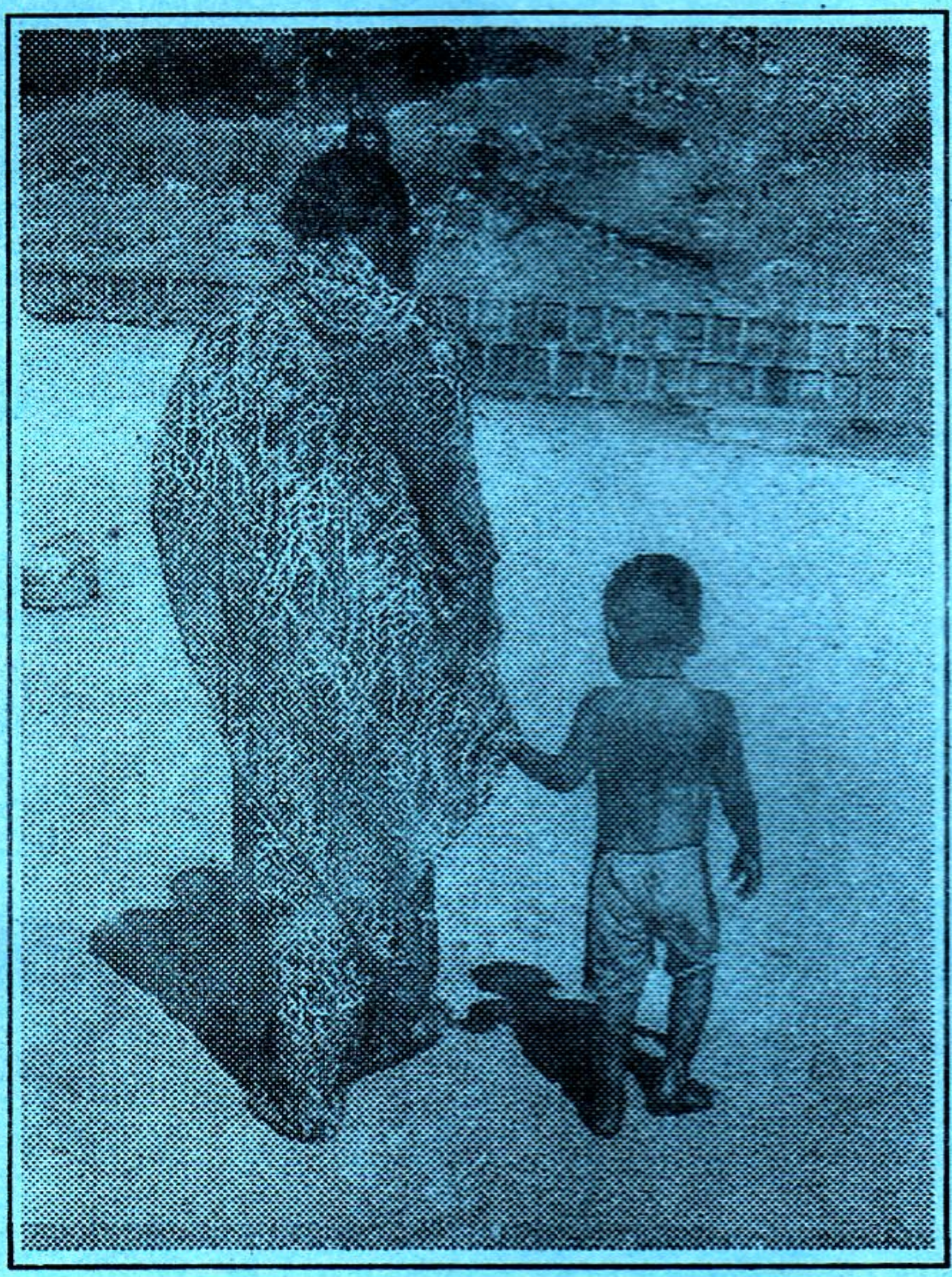

शहीद अस्पताल, दल्लीराजहरा

सिकलसेल एनिमिया के बारे में सही जानकारी

डोमनलाल एक चार साल का बालक है। वह रोज अपने साथियों को खेलते कूदते देखता तथा उसका मन भी साथियों के साथ खेलने कुदने को करता था किन्तु अपने सांस फूलने की तकलीफ के कांरण वह खेलकूद नहीं पाता। इस कारण उसकी माता विमला और पिता सखाराम सदैव ही इस बात को लेकर चिंतित रहेत और कई बार उसे समझाते भी रहते।

और एक दिन ऐसा भी आया जब डोमनलाल हाथ पैर दर्द और बुखार की समस्या लेकर बीमार पड़ गया। डोमन के माता पिता उसे लेकर पास के गांव के अस्पताल में लेकर गये जहाँ डाक्टर ने जांच करने के बाद डोमन के शरीर में खून की कमी होना बताया और तुरंत खून चढ़ाने की सलाह दी और साथ ही खून जांच कराने की सलाह भी दी। खून की रिर्पोट आने पर उसमें सिकलसेल एनिमिया पाया गया।

खून की कमी की समस्या एक डोमनलाल की ही नहीं, यह समस्या पूरे भारत में एक बहुत बड़ी समस्या है। शरीर में खून की कमी के कारण बौद्धिक एवं शारीरिक विकास रुक जाता है।

छत्तीसगढ़ में खून की कमी के साथ एक विशेष प्रकार की खून की कमी होती है, जिसे सिकलसेल एनीमिया कहा जाता है।

सिकलसेल क्या है ?

हमारे शरीर में खून बचपन में लीवर और ताप तिल्ली में बनता है उसके बाद अस्थि मज्जा में बनता है। खून में लाल रक्त कण और श्वेत रक्त कण और अनुचक्रिका होता है लेकिन जो व्यक्ति सिकलसेल एनीमिया ग्रसित होते हैं उनके लाल रक्त कण के आकार में फर्क आ जाता है। इस बीमारी में रोगी के लाल रक्तकण ऑक्सीजन की कमी के कारण हंसिये

के आकार में दिखाई देते हैं। सिकल अर्थात हंसिये के आकार होना, उसे ही सिकलसेल एनीमिया कहा जाता है।

आकार में फर्क होने पर क्या होता है ?

हमारे शरीर में लाल रक्तकण ऑक्सीजन को फेफड़ों से दूसरे हिस्सों में ले जाते हैं। जिससे ऑक्सीजन शरीर के सभी कोषों में पहुंचकर हमें ताकत प्रदान करते हैं। लेकिन लाल रक्त कण के आकार में फर्क होने के कारण उनकी ऑक्सीजन ले जाने की क्षमता कम होती है और लाल रक्त कण जल्दी-जल्दी टूटने लगता है। और शरीर के दूसरे हिस्सों में भी आक्सीजन की कमी हो जाती है, जिससे शरीर में खून की कमी हो जाती है। सिकलसेल से पीड़ित व्यक्ति हमेशा सुस्त व कमजोर दिखाई पड़ता है।

सिकलसेल ग्रस्त व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं :-

1. सिकलसेल वाहक
2. सिकलसेल एनीमिया

इसमें सिकलसेल वाहक व्यक्ति को आमतौर पर किसी प्रकार की समस्या नहीं होती इन्हें किसी इलाज की भी आवश्यकता नहीं होती और ये सामान्य जीवन व्यतीत करते है, लेकिन उनके बच्चों में सिकल की बिमारी होती है। किन्तु इसके विपरीत सिकलसेल एनीमिया ग्रस्त व्यक्ति हमेशा ही तकलीफ में रहता है।

सिकलसेल वाहक और सिकलसेल एनीमिया रोगी :-

हमारे शरीर में रक्त को लाल रंग देने वाला तत्व हिमोग्लोबीन होता है। सामान्य व्यक्ति के हिमोग्लोबीन में दो जीन्स ए. ए. होते हैं . लेकिन सिकलसेल वाहक व्यक्ति में ए.एस. जीन्स अर्थात एक ए. और एक एस. जीन्स पाया जाता है। किन्तु सिकलसेल एनीमिया व्यक्ति में

दोनो जीन्स एस.एस. रहता है। दोनो जीन्स एक माता और एक पिता से संतान में आता है। यदि माता-पिता दोनों में से एक भी सिकलसेल वाहक हो तो उनका बच्चा भी 25% सिकलसेल वाहक बन सकता है।

यदि माता पिता सिकलसेल वाहक होंगे तो उनका बच्चा भी वाहक / सिकलसेल एनीमिया ग्रस्त/स्वाभाविक हो सकता है।

यह स्थिति आप नीचे दर्शाये गये चित्र से पूर्णतया समझ पायेंगे :-

1. **माता** **पिता**

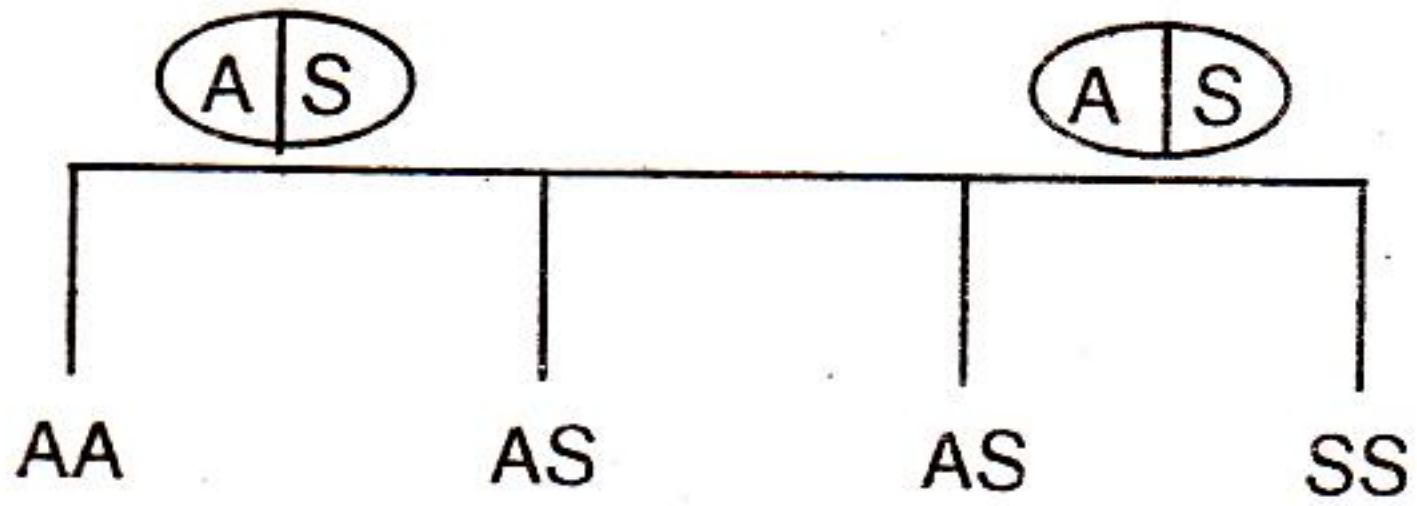

2. **माता** **पिता**

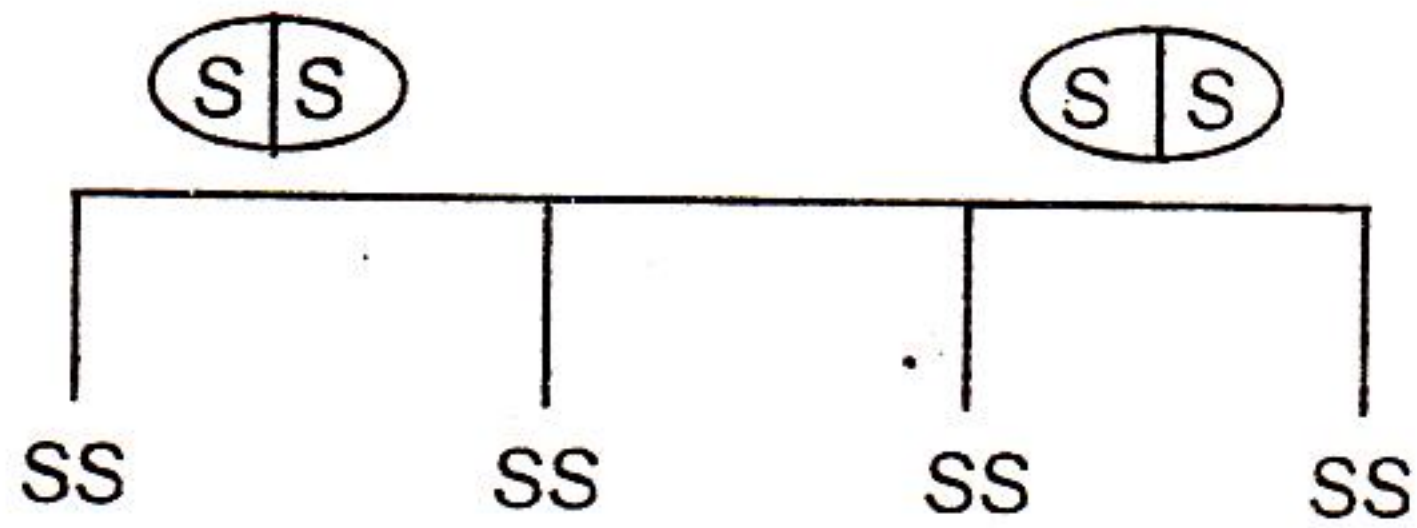

3. **माता** **पिता**

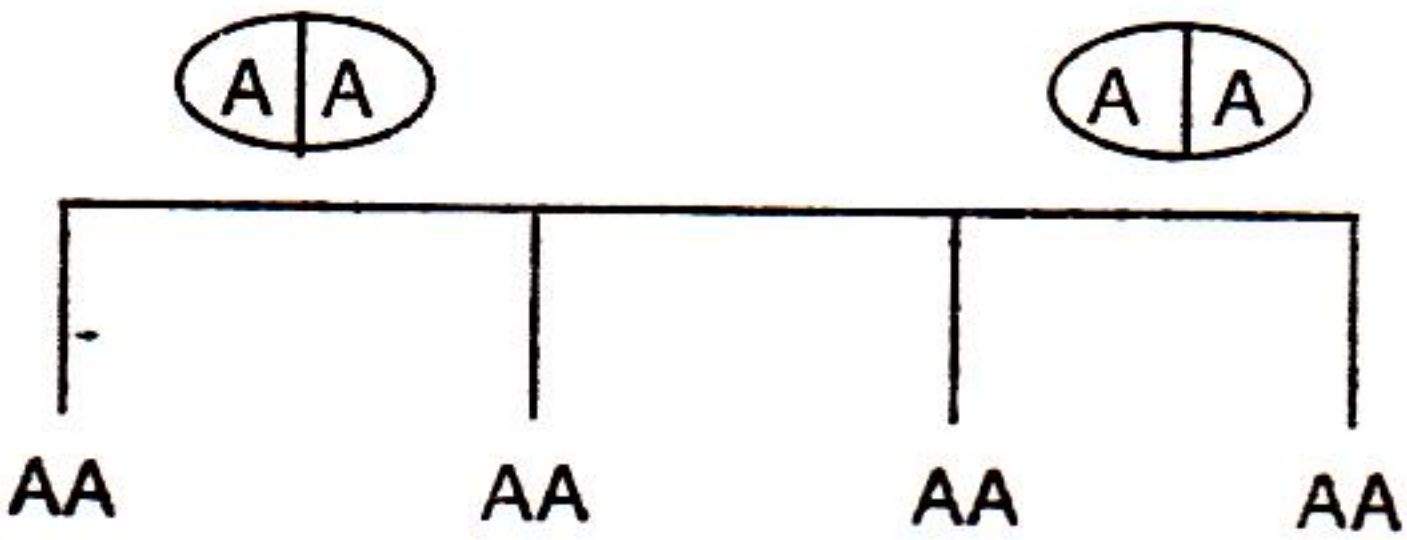

4. **माता** **पिता**

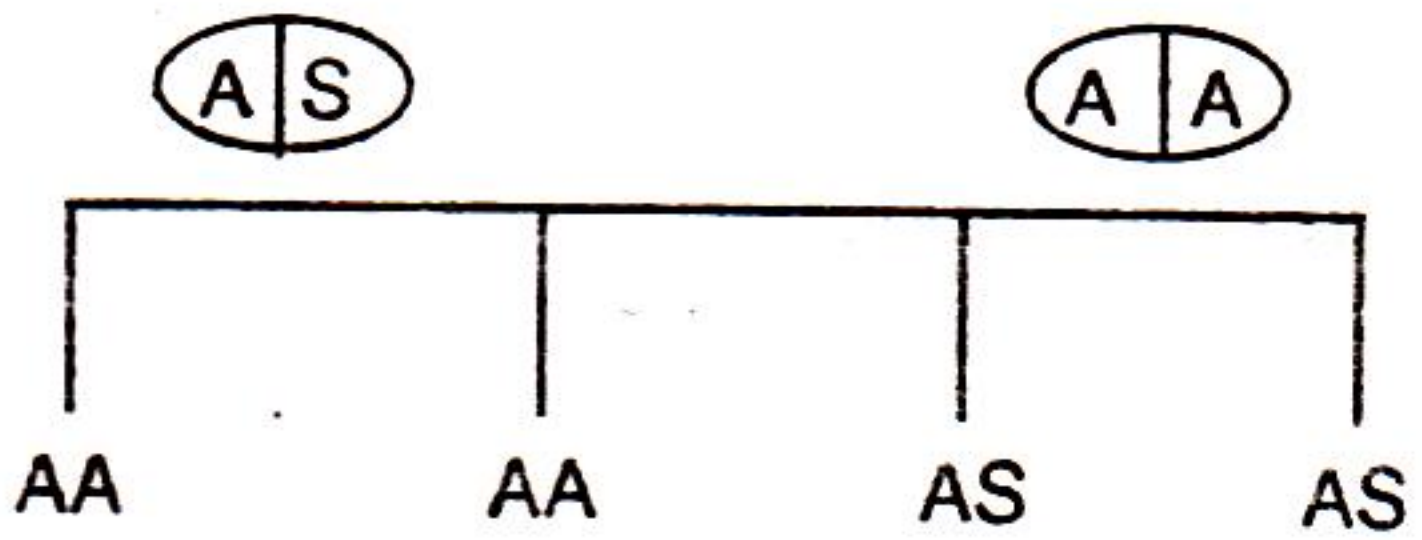

चित्र में मां - पिता के हिमोग्लोबीन में जीन की स्थिति को दर्शाया गया है और उनके बच्चों की स्थिति को दर्शाया गया है, और उनके बच्चों की स्थिति का भी दर्शाया गया है।

स्वाभाविक बच्चा - AA

सिकलसेल वाहक - AS

सिकलसेल एनीमिया- SS

छत्तीसगढ़ में सिकलसेल की स्थिति -

यूँ तो छत्तीसगढ़ क्षेत्र में अभी तक इस बीमारी के बारे में सही तरीके से सर्वेक्षण नहीं हुआ है परन्तु छोट-छोटे कस्बों आदि में जो सर्वे हुये हैं, उसमें आर्थिक एवं भौगोलिक दृष्टि से कमजोर पिछड़ी जातियों, आदिवासियों एवं गरीब जनजातियों के एक बड़े वर्ग में सिकलसेल बीमार पाये गए हैं।

सिकलसेल वाहक - 30 लाख (15.47%)

सिकलसेल एनीमिया - 2.5 लाख (1.27%)

भारतीय रेडक्रास सोसायटी छत्तीसगढ़ राज्य शाखा द्वारा जो सर्वे हुये हैं उनमें 15.47% लोग सिकलसेल वाहक एवं 1.27% लोग सिकलसेल एनीमिया से ग्रस्त पाये गये हैं।

1. स्थानीय पिछड़ी जातियों एवं जनजातियों के एक वर्ग में 22%
2. आदिवासी वर्ग में 18.6% लोगों में
3. पिछड़ी व अन्य अनुसूचित जातियों के वर्ग में 14.7% लागों में
4. अन्य वर्ग में 2 से 8% लोगों में

सिकलसेल एनीमिया के लक्षण :-

1. सिकलसेल वाहक - इन व्यक्तियों में कुछ भी समस्या नहीं होती, कभी-कभी पेशाब में खून जा सकता है।

2. सिकलसेल एनीमिया - इन व्यक्तियों में अक्सर निम्न लक्षण देखे जा सकते हैं।

1) खून की कमी होना

2) सुस्त रहना, कमजोर होना, सांस में तकलीफ होना

3) जोड़ों में दर्द एवं सूजन होना

4) तिल्ली का बढ़ जाना।

5) उम्र के अनुसार शारीरिक वृद्धि कम होना या रुक जाना।

6) बार - बार गर्भपात होना।

7) पीलिया होना

8) लीवर का बढ़ जाना

9) बार - बार पेट दर्द होना।

11) पैर में धाव होना .

सिकल की जांच :-

सिकलसेल रोग की जांच खून के जांच से की जाती है। जो स्लाइड और सेलीबिलीटी जांच द्वारा की जाती है, किन्तु हिमोग्लोबीन इलेक्ट्रोफेरोसिस जांच द्वारा ही सिकलसेल वाहक या सिकलसेल एनीमिया रोगी में फर्क किया जा सकता है।

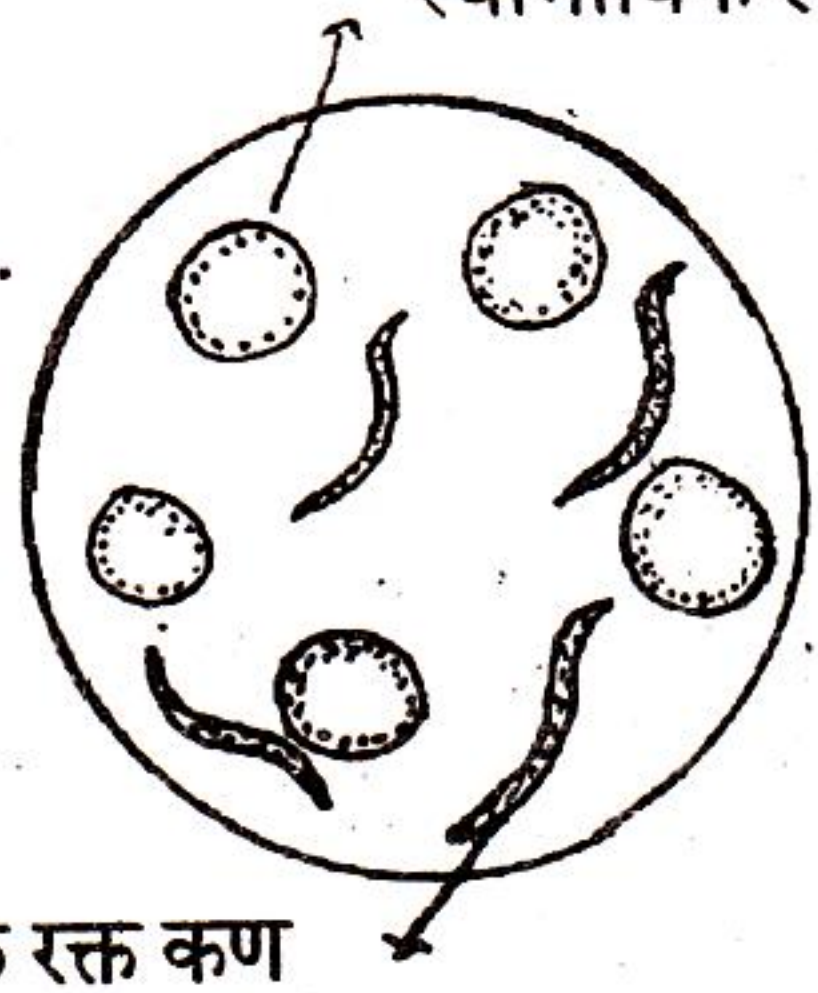

सिकलसेल ग्रसित लाल रक्त कण

सिकल क्राइसिस क्या है ?

सिकल क्राइसिस सिकलसेल एनीमिया पीड़ित व्यक्ति के लिए बहुत ही दर्दनाक स्थिति होती है। इस समय सिकलसेल पीड़ित व्यक्ति की कोई भी समस्या जैसे : जोड़ों में दर्द, छाती में दर्द बहुत अधिक बढ़ जाता है। जिसके कारण बीमार व्यक्ति के लिए कुछ भी कर पाना संभव नहीं हो पाता।

सिकलसेल क्राइसिस होने के कारण :-

लाल रक्त कणों की चिपचिपाहट बढ़ जाती है जिसके कारणवश खून की विभिन्न नालियों में कणिकायें चिपक जाती है और ऑक्सीजन सभी अंगो तक पहुंच नहीं पाती जिससे दर्द, कोषों में क्षति, जोड़ों में सूजन, कभी-कभी स्ट्रोक व अन्धापन भी हो सकता है।

क्या - क्या क्षति कर सकता है ?

1) स्ट्रोक (दिमाग या दिल में क्षति)

2) अचानक छाती में दर्द

3) बुखार,श्वांस में समस्या

4) शरीर के अंगों में खराबी आना

5) अन्धा होना

सिकलसेल ग्रस्त व्यक्ति में संक्रमण रोकने के लिए क्या करना चाहिये ?

सिकलसेल पीड़ित व्यक्ति बहुत जल्दी संक्रमण ग्रस्त होता है। तीन माह से ही पेनिसिलीन इंजेक्शन चिकित्सक की सलाह से पांच वर्ष तक लगवाना चाहिये। निमोनिया एवं इनफ्लूएन्जा के लिए टीका लगवाना चाहिये।

सिकल क्राइसिस रोकने के लिए -

- अधिक से अधिक पानी पीना चाहिये, लगभग 1.5 लीटर अर्थात 6 से 8 गिलास पानी रोज पीना चाहिये।
- हल्का व्यायाम करना चाहिये।
- धूम्रपान नहीं करना चाहिये .
- संतुलित एवं पौष्टिक आहार आहार लें।
- अधिक गर्मी एवं अधिक ठंड में नहीं रहना चाहिये।
- अधिक ऊंचाई में नहीं चढ़ना चाहिये।
- मानसिक तनाव से दूर रहें।

ज :-

1. सिकल वाहक में समस्या न के बराबर ही होती है इसलिये इलाज की जरुरत नहीं पड़ती।
2. सिकलसेल बीमारग्रस्त अपने चिकित्सक की सलाह से ही फोलिक एसिड या हाईड्रोक्सीयूरिया जैसी दवाओं का सेवन करें।
3. बीच-बीच में हीमोग्लोबीन की जांच कराते रहें।
4 अस्थिमज्जा प्रतिस्थापन भी करवाया जा सकता है किन्तु यह चिकित्सा बहुत महंगी है।

जानिये !

सिकलसेल एक अनुवांशिक बीमारी है, जो माता - पिता से संतान में आता है किन्तु इसकी कोई भी दवा ऐसी नहीं है जो इसे जड़ से समाप्त कर सके। नीम हकीम के चक्कर में न आयें।

आभार प्रदर्शित :-

- संचानालय स्वास्थ्य सेवायें (छत्तीसगढ़)
- सी. एम.डी.टी.
- इंटरनेट गूगल वेबसाइड

समर्पित :-

- रीना
- राजेन्द्र
- शालु
- सुनील रामटेके
- राकेश
- चित्रा

एवं ऐसे सभी लोग जो सिकलसेल बीमारी से पीड़ित हैं।

शहीद अस्पताल

मेहनतकशों के स्वास्थ्य के लिए
मेहनतकशों का अपना कार्यक्रम

छत्तीसगढ़ माईन्स श्रमिक संघ व छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा का शराब बन्दी प्रचार आन्दोलन का अंग है यह पुस्तक।

कोई भी व्यक्ति या संस्था लोगों को शराब के खिलाफ़ जागरुक एवं शराब़ बन्दी आंदोलन में संगठित करने के लक्ष्य से इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी तरीके से इस्तेमाल कर सकता है।

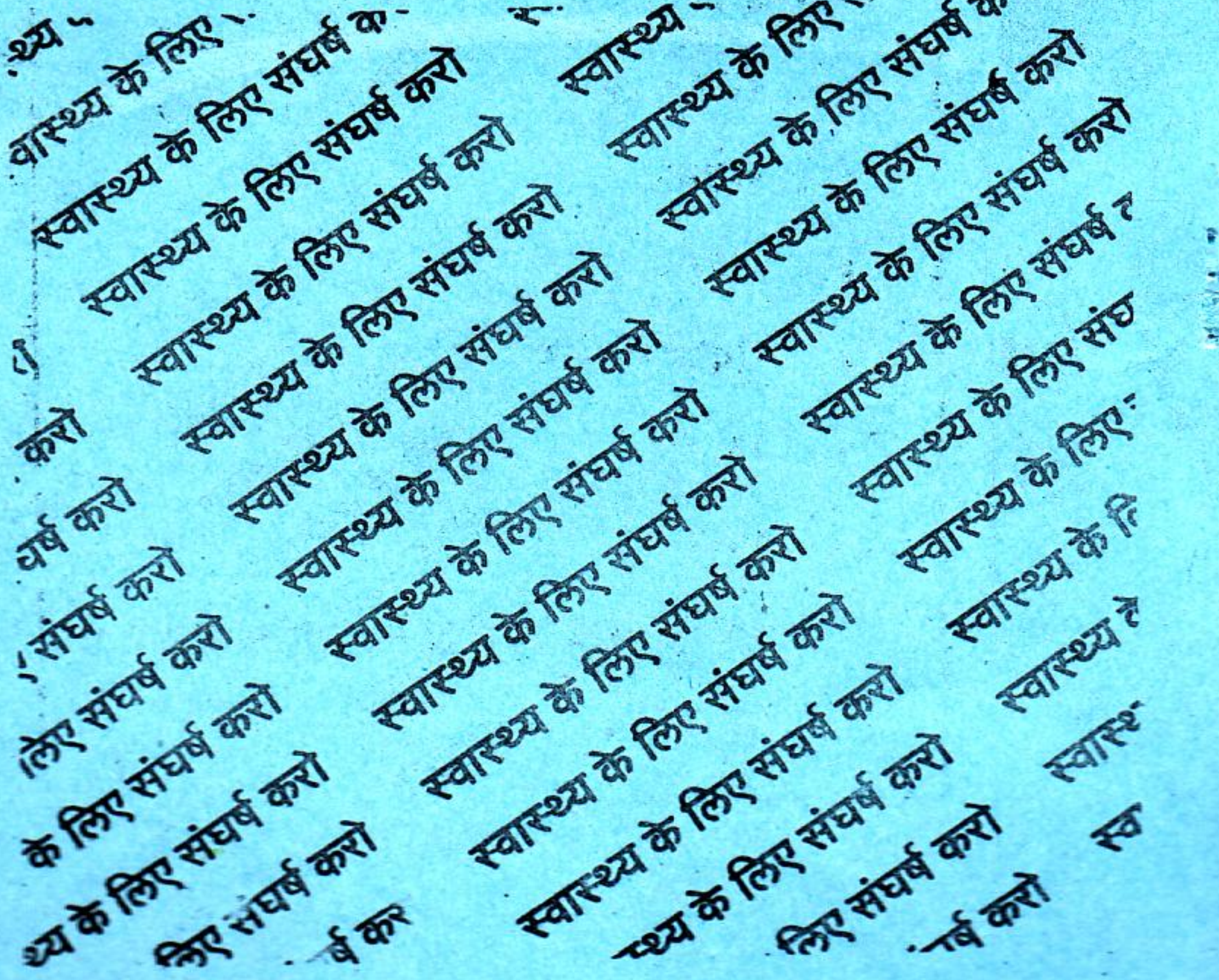

प्रकाशक : शहीद अस्पताल, दल्ली-राजहंरा, दुर्ग (छ.ग.) 491 228
मुद्रक : विजय प्रिंटिंग प्रेस, बालोद, दुर्ग
द्वितीय प्रकाशन : नवम्बर 2007

सहायता राशि : 5/- रुपये